पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.02.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के
"आर्य युवा निर्माण" में
केवल ₹100/-
का सहयोग आज ही भेंजें ।
अग्रिम धन्यवाद -डा.अनिल आर्य

वर्ष-31 अंक-18 फाल्गुन-2071 दयानन्दाब्द 191 16 फरवरी से 28 फरवरी 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.02.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के आदर्शो को जीवन में धाारण करें- डा.अशोक कुमार चौहान

शिक्षाविद् डा. अशोक कुमार चौहान व श्री आनन्द चौहान का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री यशोवीर आर्य व डा. धर्मेन्द्र कुमार। द्वितीय चित्र– प्रो. महावीर अग्रवाल का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री महेश बत्रा (उपायुक्त, दिल्ली पुलिस), डा.अशोक कुमार चौहान व डा.धर्मेन्द्र कुमार।

नई दिल्ली। रविवार, 15 फरवरी 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली व संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, युग प्रवर्तक, आर्य समाज के संस्थापक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का 191 वां जन्म दिवस'' संस्कृत अकादमी सभागार, झण्डेवाला, करोल बाग, नई दिल्ली में सौल्लास मनाया गया। समारोह में दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैंकड़ों आर्य जनों ने सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द के आदर्शो पर चलने का संकल्प लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि डा.अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी विश्वविद्यालय) ने कहा कि महर्षि दयानन्द राष्ट्र नायक थे, जब सब ओर अन्धकार छाया था, उन्होंने कुरीतियों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, मठाधीशों पर सीधा प्रहार किया जिसके लिए साहस की जरूरत होती है। स्वामी दयानन्द ने जिस तेजस्विता के साथ समाज की दिशा बदली वह समय के साथ आज मन्द हो गयी है उसे पुनः जागृत करने की आवश्यकता है। आज महर्षि दयानन्द के आदर्शो को जीवन में धारण करने की आवश्यकता है जिससे हम समाज को एक नयी दिशा प्रदान कर सकें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही लेकिन आज अलगाववादी ताकतें देश को कमजोर कर रही हैं, आर्य जनों को देश की एकता व अखण्डता के लिये फिर से कार्य करने की आवश्यकता है। राष्ट्र के सामने आंतकवाद, प्रान्तवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, युवा पीढ़ी में बढ़ती नशा खोरी, धर्म के नाम पर बढ़ता पाखण्ड आदि की चुनौतियां समाज के सामने हैं जिसके विरूद्वसंघर्ष का शंखनाद आर्य जनों को ही करना है।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय,हरिद्वार के कुलपति प्रो.महावीर अग्रवाल ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने जो उर्जा,चिंगारी,क्रांतिकारी विचार,आचरण,सिद्वान्त के विरूद्वसमझौता न करना गुण समाज को दिए उस चिंगारी को फिर से प्रज्जवलित करने की आवश्यकता है। समाज परिवर्तन का जो स्वपन महर्षि दयानन्द ने देखा था उसे आर्यो को आज पूरा करने का संकल्प लेना है।

वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि स्वामी दयानन्द महान क्रांतिकारी थे, उनके समाज उत्थान में योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता चाहे नारी शिक्षा, विधवा विवाह, बाल विवाह, पाखण्ड–अन्धविश्वास के विरूद्ध शंखनाद हो हर क्षेत्र में उनकी छाप दिखाई देती है।

दिल्ली पुलिस के उपायुक्त श्री महेश बत्रा ने कहा कि कुरीतियों का उन्मूलन वैचारिक व सामाजिक क्रान्ति से ही किया जा सकता है, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' से पूरे समाज में आमूल चूल परिवर्तन किये तथा विश्व को एक नयी दिशा प्रदान की।

संस्कृत अकादमी के सचिव डा.धर्मेन्द्र कुमार ने कहा कि आज के प्रदूषित वातावरण में गुरूकुलीय शिक्षा पद्वति का महत्व बढ़ जाता है,आज हमारी भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक मूल्यों के साथ लगातार खिलवाड़ हो रहे हैं। आज भारत उन्नति तो कर रहा है पर चरित्र और विचारों का पतन हो रहा है उसे बचाने के लिए महर्षि दयानन्द जी के विचारों पर चलने की आवश्यकता है अन्यथा हम वहां पहुँच जायेंगे जहां से वापिस आना कठिन हो जायेगा। समारोह का उद्घाटन आर्य नेता श्री आनन्द चौहान ने 'ओ३म्'' ध्वज फहरा कर किया। युवा गायक अंकित उपाध्याय ने मधुर संगीत से समां बांध दिया । ब्र.विश्वपाल जयन्त(कोटद्वार,पौढ़ी गढ़वाल), आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, बहिन गायत्री मीना, महेन्द्र भाई, कै. अशोक गुलाटी आदि ने अपने विचार रखे। कश्मीर से आयी कु.सफीना, आबीदा, परवीना, गौहर ने मधुर गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने की।

प्रमुख रूप से डा. मदनमोहन बजाज, ओम सपरा, प्रवीन आर्य, यशोवीर आर्य, सुरेश आर्य, देवेन्द्र भगत, प्रकाशवीर शास्त्री, सन्तोष शास्त्री, सौरभ गुप्ता, सरोजनी दता, सोहनलाल मुखी, कर्नल अजयवीर, आर्य तपस्वी सुखदेव, सुरेन्द्र कोहली, रणसिंह राणा, अमरनाथ गोगिया, चन्द्रमोहन कपूर आदि उपस्थित थे।

मधुर भजन प्रस्तुत करते हुए कश्मीर से आयी–कु. आबीदा, परवीना, गौहर व सामने सभागार में उपस्थित श्रद्धालु आर्य जन।

'ईश्वर को क्यों जानें, जानें या न जानें?'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हमारे एक लेख 'ईश्वर सर्वज्ञ है तथा जीवात्मा अल्पज्ञ है' को गुरूकुल में शिक्षारत एक ओजस्वी युवक व हमारे मित्र ने पसन्द किया और अपनी प्रतिक्रया में कहा कि लोग ईश्वर को मानते नहीं है अतः एक लेख इस भीर्षक से लिखें कि हम ईश्वर को क्यों मानें? हमें यह सुझाव पसन्द आया और हमने इस विषय पर लिखने का उन्हें आश्वासन दिया। ईश्वर को हम मानें या न मानें, परन्तु पहले उसे जानना आवश्यक हैं। जानना क्यों है? इसलिये कि यदि हमें उससे कुछ लाभ होता या हो सकता है तो हम उससे वंचित न रहें। यदि उससे कुछ लाभ नहीं भी होता है तो फिर उसे जानकर उसको मानना छोड़ सकते हैं। प्रश्न का मूल यह भी है कि क्या ईश्वर है? इसका उत्तर है कि ईश्वर हो भी सकता है और नहीं भी। यदि नहीं है तो फिर एक प्रश्न जिसका उत्तर ढूंढना होगा वह यह है कि यदि नहीं है तो यह ब्रह्माण्ड कैसे बना, किसने बनाया व क्यों बनाया? प्राणी जगत को कौन बनाता है और इनका नियमन किसके द्वारा होता है? कोई भी क्रिया यदि होती है तो उसके कर्ता का होना अवश्यम्भावी है। यदि कर्ता न हो तो क्रिया होना सम्भव नहीं है। संसार में हम अपनी आंखों से जिन सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि पदार्थों और प्राणी जगत को देखते हैं उनका कर्ता अर्थात उन्हें बनाने वाला कोई न कोई तो अवश्य ही है। यदि नहीं है तो अपने–आप वा स्वतः तो कुछ बनेगा नहीं। संसार यथार्थतः अर्थात् सचमुच में है, यह इस बात का प्रमाण है कि संसार का कर्ता अर्थात् इसका बनाने वाला अवश्य है। उसका अस्तित्व सिद्ध हो जाने के बाद उसके स्वरूप का तर्क, बुद्धि वा युक्तिसंगत ज्ञान होना आवश्यक है अन्यथा फिर अन्ध–विश्वास अपना काम करते हैं और हमारा जीवन अज्ञान पूर्ण कृत्यों व झूठी आस्था को समर्पित हो जाता है।

उस सृष्टा का स्वरूप जानने के लिए उसका पहला गुण उसकी सत्ता का होना है अतः इस कारण से वह सत्य पदार्थ कहा जाता है। रचना हमेशा चेतन तत्व द्वारा होती है, जड़ या निर्जीव तत्व के द्वारा नहीं होती, अतः सृष्टा का एक स्वरूप या गुण उसका चेतन तत्व होना है जिसे चित्त कहा जाता है। अब कोई चेतन सत्ता जिसमें दुख व क्लेश हो, वह तो संसार को बना नहीं सकती, अतः उसका समस्त दुःखों से रहित होना और आनन्द स्वरूप होना भी सिद्ध होता है। इसके बाद हम इस ब्रह्माण्ड के स्वरूप पर ध्यान देते हैं और विचार करते हैं तो हमें यह अनन्त परिमाण वाला दिखाई देता है। रचना व रचयिता का एक स्थान पर होना आवश्यक है। हम देहरादून में बैठे हुए जहां पर हैं, वही पर कोई रचना कर सकते हैं। देहरादून में या किसी स्थान पर स्थित कोई व्यक्ति वहां से 5 या 10 किमी. वा कम या ज्यादा दूरी पर कोई रचना नहीं कर सकते। अतः इस संसार को अनन्त परिमाण में देखकर ईश्वर भी अनन्त व सर्वव्यापक, सर्वदेशी सिद्ध होता है और उसका सूक्ष्मतम होना भी आवश्यक है। इस ब्रह्माण्ड को बनाने के लिए अल्प भाक्ति से काम नहीं चलेगा अतः उसका सर्वशक्तिमान होना भी अपरिहार्य है। कोई भी उपयोगी रचना के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान की कमी से रचना करने पर उसका उद्देश्य पूरा नहीं होता तथा रचना में दोष आ जाते हैं। जिस सत्ता से यह सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, मानव शरीर व अन्य प्राणी जगत बना है, वह कोई साधारण ज्ञानी नहीं है अपितु उसमें ज्ञान की पराकाष्ठा है, ऐसी सत्ता वह सिद्ध होती है। अतः उसे सर्वज्ञानमय या सर्वज्ञ कहा जाता है। इस प्रकार से अन्यान्य गुणों का समावेश उस सत्ता में सिद्ध होता व किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने इस सत्ता के स्वरूप को एक वाक्य में इस प्रकार से कहा है – ईश्वर सत्य–चित्त–आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

ईश्वर के इस स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर उसके अन्य कार्यों को भी विचार कर जान लेते हैं। ईश्वर ने प्राणी जगत को बनाया है जिसमें मनुष्य, पशु, पक्षी अर्थात् समस्त थलचर, नभचर तथा जलचर आदि सम्मिलित हैं। इन सभी प्राणियों के शरीरों में हम एक–एक जीवात्मा को पाते हैं। इन सूक्ष्म, एकदेशी, ससीम, चेतन तत्व जीवात्माओं को ही ईश्वर ने भिन्न–भिन्न प्राणि–शरीर प्रदान किये हैं जिनसे यह सुख व दुखों का भोग करने के साथ कर्म में प्रवृत्त रहते हैं। सभी प्राणियों के सुख–दुख के जब कारणों की विवेचना करते हैं तो ज्ञात होता है कि भाुभ व अशुभ, अच्छे वा बुरे तथा पुण्य वा पाप कर्मों को मनुष्य योनि में लोग करते हैं। भाुभ, अच्छे व पुण्य कर्मों का फल सुख दिखाई देता है और अशुभ, बुरे वा पाप कर्मों का फल दुःख दिखाई देता है। अतः ईश्वर जीवात्माओं को कर्म के फल प्रदान करने वाला तथा सभी प्राणियों को उनके शुभाशुभ कर्मों के आधार पर मनुष्य, पशु, पक्षी आदि योनियें में जन्म देता है, यही तर्क व युक्तियों से सिद्ध होता है। यह भी ईश्वर के स्वरूप व कार्यों का एक मुख्य अंग है।

ईश्वर का स्वरूप विदित हो जाने के बाद हमें थोड़ा सा अपने स्वरूप पर भी विचार करना उचित प्रतीत होता है। हम सब चेतन तत्व है और हमारी सत्ता यथार्थ अर्थात् सत्य है। हमारी सत्ता काल्पनिक व अन्धकार में रस्सी को देख कर सांप की भ्रांति होने जैसी नहीं है अपितु यह पूर्णतः सत्य है व उसका अस्तित्व यथार्थ है। यह अस्तित्व अनुत्पन्न, अनादि, नित्य, अविनाशी, अमर सिद्ध होता है। कोई मनुष्य दुःख नहीं चाहता परन्तु वह इसमें विवश है। जब–जब उसे दुःख, रोगादि व दुर्घटनाओं, आर्थिक तंगी, अशिक्षा, अज्ञान आदि के कारण होता है तो उसमें वह विवश व परतन्त्र होता है। इससे यह सिद्ध होता है दुःख का कारण उसके अशुभ कर्म वा उन कर्मों के ईश्वर द्वारा दिये जाने वाले फल हैं जो वर्तमान व पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर ईश्वर से उसे जीवन भर मिलते रहते हैं। इस प्रकार से जीव की सत्ता अनादि, नित्य व इसका स्वरूप सत्य व चेतन, एकदेशी, सूक्ष्म, आकार–रहित, अजर, अमर, जन्म–मरण–धर्मा सिद्ध होता है।

ईश्वर के बारे में संक्षेप में तो हम जान ही गये हैं। उसका अस्तित्व निर्भ्रान्त रूप से सिद्ध है। अब उसको माने या न मानें, इस प्रश्न पर विचार करते हैं। जो पदार्थ यथार्थ रूप में हैं उनको मानना ही ज्ञान व न मानना अज्ञान कहलाता है। ईश्वर है तो उसे तो मानना ही पड़ेगा। अब दूसरी प्रकार का मानना यह है कि हम उससे क्या कोई लाभ ले सकते हैं या स्वयं को होने वाली हानियों से बचा सकते हैं? इसका उत्तर है कि हम उसका चिन्तन कर उसे अधिक से अधिक जानने का प्रयास करें। इस कार्य में हम सत्यार्थ प्रकाश आदि सत्य के अर्थ का प्रकाश करने वाले ग्रन्थ की सहायता भी ले सकते हैं। मनुष्य को ज्ञान नैमित्तिक साधनों से प्राप्त होता है। यह ज्ञान माता–पिता–आचार्यों से भी प्राप्त होता है या फिर पुस्तकों का अध्ययन कर ज्ञान हो सकता है। माता–पिता–आचार्यों व पुस्तकों की बहुत सी या कुछ बातें अज्ञान व अविवेक पूर्ण भी हो सकती है जो कि उनकी ज्ञान की क्षमता पर निर्भर होती है जो कि सीमित है। कोई भी मनुष्य पूर्ण ज्ञानी अर्थात् सर्वज्ञ कदापि नहीं हो सकता। ससीम व एकदेशी होने के कारण जीवात्मा अल्पज्ञ अर्थात् अल्प ज्ञान प्राप्त करने वाली है। इसे ज्ञान वृद्धि के लिए माता–पिता–आचार्यों की अपेक्षा होती है जो इससे अधिक जानते हों। अतः सत्य ज्ञान की पुस्तकों को पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। पुस्तकों का ज्ञान भी दो प्रकार का होता है। अधिकांश पुस्तके सत्य व असत्य का मिश्रण होती हैं। अनेक पुस्तकें, धार्मिक व सामाजिक सभी प्रकार की, क्षुद्राशय मनुष्यों ने अपनी अज्ञानता व कुछ स्वार्थों के कारण बनाई हुई होती हैं वा हैं जिसमें सत्य के साथ असत्य मिश्रित है और ऐसी पुस्तकें विश मिश्रित अन्न या भोजन के समान हैं। प्रायः अल्पज्ञानी मनुश्यों द्वारा ही निर्मित सभी पुस्तकें हैं और सभी इसी कोटि में आती है। चार वेद यद्यपि ज्ञान की पुस्तकें हैं परन्तु यह किसी मनुष्य की रचना न होकर संसार को बनाने वाले और चलाने वाले सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर की रचनायें हैं। इन पुस्तकों में निहित ज्ञान को ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार श्रेष्ठ बुद्धि व स्वस्थ भारीरधारी पुण्यात्माओं को प्रदान किया था। इन्हीं वेदों के आधार सतत वेदों का अध्ययन, चिन्तन, उपासना करके हमारे प्राचीन ऋषियों ने वेदानुकूल सत्य ज्ञान की पुस्तकों को रचा था। ऐसे ग्रन्थों में वेदों से इतर शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, निघण्टु, ज्योतिष, उपनिषद व दर्शन, प्रक्षेप रहित मनुस्मृति आदि ग्रन्थ हैं। इनमें सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ भी सम्मिलित होते हैं।

इन पुस्तकों का अध्ययन कर सत्य–सत्य ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है। इनसे यह जाना जाता है कि हम ईश्वर से जीवन में जो चाहें, वह प्राप्त कर सकते हैं। उसके लिए हमें अपनी प्रार्थना के अनुरूप पात्रता को प्राप्त करना होता है। संसार में धन व सम्पत्ति आवश्यक हैं। इसकी प्राप्ति के लिए मनुष्यों का स्वस्थ भारीर होना आवश्यक है। अतः स्वास्थ्यवर्धक भोजन, व्यायाम व प्राणायाम आदि करके भारीर को स्वस्थ रखना चाहिये और रोगादि होने पर उचित उपचार करना चाहिये। इसके अतिरिक्त संसार के सबसे बहुमूल्य पदार्थ ईश्वर को जानकर उसकी प्राप्ति के लिए स्तुति, प्रार्थना व उपासना करनी चाहिये। इससे ईश्वर से मित्रता व प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इसकी अन्तिम परिणति ईश्वर साक्षात्कार के रूप में होती है। यह ऐसी अवस्था होती है कि इसे प्राप्त कर कुछ प्राप्त करना भोष नहीं रहता। मनुष्य के आधिदैविक, आधिभौतिक व आध्यात्मिक, इन तीन कारणों से होने वाले सभी दुःखए ईश्वरोपासना एवं सदकर्मों से दूर हो जाते हैं। जीवन पूर्णतः सुखी हो जाता है। इस स्थिति में पहुंच कर मनुश्य दूसरों का मार्गदर्शन, उपदेश व प्रवचन द्वारा तथा सरल भाशा में अज्ञान व अन्धविश्वास रहित तथा ज्ञान से पूर्ण पुस्तकें लिखकर कर सकता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु होने पर वह जन्म–मरण के चक्र से छूट जाता है। कारण यह है कि जन्म व मरण हमारे कर्मों के आश्रित हैं और जब हम कोई अशुभ कर्म करेंगे ही नही तो फिर जन्म होगा ही नहीं। यह मोक्ष की अवस्था कहलाती है। जिस प्रकार अच्छा व श्रेष्ठ कार्य करने पर माता–पिता–आचार्यों व शासन से पुरस्कार मिलता है, उसी प्रकार से उपासना की सफलता व अशुभ कर्मों का क्षय हो जाने पर पुरस्कार स्वरूप ईश्वर के द्वारा मोक्ष प्राप्त होता है। यह मोक्ष ऐसा है कि इसमें जीवात्मा को ईश्वर के द्वारा सुखों की पराकाष्ठा आनन्द की प्राप्ति होती है। इसकी अवधि 31 नी 10 खरब 40 अरब वर्षों की होती है। इतनी अवधि तक जीवात्मा जन्म व मृत्यु के चक्र से छूट कर ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आनन्द का उपभोग करता है। मोक्ष व उपासना के बारे में वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों को पढ़कर निर्भ्रान्त ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

हमने अपने अध्ययन में पाया कि महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती आदि महात्माओं ने वेदों एवं इतर वैदिक साहित्य का अध्ययन कर ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति के सत्य स्वरूप को जाना था। उनका जीवन ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना के साथ वैदिक कर्तव्यों का निर्वहन अर्थात् पंच महायज्ञ आदि कर्मों को करने के साथ समाज के हितकारी परोपकारी, सेवा व समाजोन्नति तथा देशोन्नति के कार्यों में व्यतीत हुआ। यह सभी लोग प्रातः व सायं नियमित रूप से ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना करते थे। इससे यह बात भी ज्ञात होती है कि इन महात्माओं की गुणों व कर्मों की समानता व पवित्रता के कारण ईश्वर से पूर्ण निकटता थी। समाज के हित के सभी सेवा व परोपकार आदि कार्य भी इन्होंने किये। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती तथा महात्मा हंसराज शिक्षा जगत से जुड़े हुए थे और इस क्षेत्र में इन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया। पं. लेखराम ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित की खोज के साथ वैदिक धर्म का प्राणपन से प्रचार किया और अगणित स्वजातीय बन्धुओं को विधर्मी होने से बचाया और अन्य मतों के बन्धुओं में वैदिक मत का प्रचार कर उन्हें वैदिक धर्म का प्रेमी व प्रशंसक बनाया। इन सभी बन्धुओं ने उपासना के द्वारा ईश्वर से अत्यन्त निकटता प्राप्त की हुई थी। महर्षि दयानन्द तो असम्प्रज्ञात समाधि को भी सिद्ध किये हुए थे। अन्य महात्मा वा महापुरूष भी असम्प्रज्ञात समाधि के अत्यन्त निकट थे जो कि मोक्ष व जीवन की पूर्ण सफलता का द्वारा व आरम्भ है। इन सभी महात्माओं ने पवित्र जीवन व्यतीत किया जो हम सभी के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है। समाज में इनका अति उच्च एवं सम्माननीय स्थान था और इनका व्यक्तिगत जीवन भी सन्तोष रूपी सुख से भरपूर था। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इन जैसा जीवन ही सभी मनुष्य जीवनधारी प्राणियों का होना अभीष्ट है।

ईश्वर को क्यों जाने ? जाने या न जाने? का उत्तर हमें मिल चुका है। यदि हमने ईश्वर को जान लिया तो हम निश्चय ही उसे मानेगे भी अर्थात् अपने लाभों के लिए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना वेद के अनुसार करेंगे जिसका परिणाम होगा कि हम सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त होकर सदा आनन्द में विचरण करने वाले होकर मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे। आईयें, ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानने का प्रयास करें, सत्साहित्य का अध्ययन करें और अज्ञान, ढ़ोग, पाखण्ड, अन्धविश्वासों व कुरीतियों को तिलांजलि दे दें क्योंकि इनसे बन्धन पैदा होते हैं और जीवन सुख–दुख के चक्र में फंस कर असफल होता है।

– 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

बोधत्व राष्ट्र के लिए

- शिवदेव आर्य

संसार में जितने भी पर्व तथा उत्सव आते हैं, उन सबका एक ही माध्यम (उद्देश्य) होता है - हम कैसे एक नए उत्साह के साथ अपने कार्य में लगें? हमें अब क्या-क्या नई-नई योजनाएं बनाने की आवश्यकता है, जो हमें उन्नति के मार्ग का अनुसरण करा सकें। समाज में दृष्टिगोचर होता है कि उस उत्सव से अमुक नामधारी मनुष्य ने अपने जीवन को उच्च बनाने का संकल्प लिया और पूर्ण भी किया।

यह सत्य सिद्धान्त है कि जो व्यक्ति सफल होते हैं, वह कुछ विशेष प्रकार से कार्य को करते हैं। शिवरात्री का प्रसिद्ध पर्व प्रायः सम्पूर्ण भारतवर्ष में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उपासक सम्पूर्ण दिन उपवास रखते हैं तथा रात्री को शिव की आराधना करते हुए शिव के दिव्य दर्शन प्राप्त करने का अतुलनीय प्रयास करते हैं। ऐसा ही प्रयास करने का इच्छुक अबोध बालक मूलशंकर भी आज से लगभग 172 वर्ष पूर्व 'शिवरात्रि' का पर्व परम्परागत रूप से मनाता है।

घोर अन्धकार को धारण की हुई कालसर्पिणी रूपी रात्री में एक अबोध बालक बोध की पिपासा लिये शिव के दर्शन करने का यत्न करता है। शिव की मूर्ति उसके नेत्रों के सामने थी। जैसे-जैसे रात्री का अन्धकार बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे ही बालक मूलशंकर का मन एकाग्र होता जा रहा था।

अचानक एक महत् आश्चर्यजन्य आश्चर्य का उदय होता है। शिव की प्रतिमा पर चूहे चढ़ गये। चूहें शनै-शनै (धीरे-धीरे) मिष्ठान्नों को खाने लगे और मूर्ति के ऊपर मल-मूत्र का विसर्जन कर रहे थे। इस सत्य को देख बालक के होश उड़ गये। आखिर ये हो क्या रहा है? कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। अचानक याद आया कि पिता जी ने बताया था कि शिव इस संसार की रचना करते हैं तथा पालन करते हुए इस सृष्टि का संहार करते है। अरे, ये तो बडी विचित्र बात हुई भला जिसके दो हाथ हो, दो पैर हो, दो ही नेत्र आदि-आदि सब कुछ हमारे ही समान हो वह इतना विचित्र कैसे हो सकता है? वह इस सम्पूर्ण संसार का निर्माण कैसे कर सकता है? इतने बड़े-बड़े पर्वतों तथा नदी-नालों का निर्माण कैसे कर सकता है? और यदि कर भी सकता है तो यह मूर्ति रूप में क्यों है? प्रत्यक्ष सामने क्यों नहीं आता? बहुत विचार-विमर्श करने के पश्चात् बालक ने पिता जी से पूछ ही लिया कि पिता जी! आप ने कहा था कि आज रात्री को शिव के दर्शन होंगे परन्तु अभी तक तो कोई शिव आया ही नहीं है। और ये चूहें कौन हैं, जो शिव के ऊपर चढ़े चढ़ावे को खाकर यहीं मल-मूत्र का विसर्जन कर रहे हैं? जब शिव सम्पूर्ण संसार का निर्माण करके उसका पालन करता है, तो ये अपनी स्वयं की रक्षा करने में क्यों असमर्थ हो रहा है? आखिर असली शिव कौन-सा है? कब दर्शन होंगे? आदि-आदि प्रश्नों से पिता श्री कर्षन जी बहुत परेशान हो गये तथा अपने सेवकों को आदेश दिया कि इसे घर ले जाओ। घर जाकर मां से भी यही प्रश्न, पर समाधान कहीं नहीं मिला। शिव की खोज में घर को छोड़ दिया। जो जहां बताता वहीं शिव को पाने की इच्छा से इधर-उधर भटकने लगा पर अन्त में अबोध को बोधत्व (ज्ञान) प्राप्त हो ही गया। और उसी स्वरूप का वर्णन करते हुए आर्य समाज के द्वितीय नियम में लिखते हैं कि - जो सत-चित-आनन्दस्वरूप हो, निराकार, सर्वशक्मिान, न्यायकारी, दयालु, अजन्म, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र हो और जो इस सम्पूर्ण सृष्टि की रचना, पालन तथा संहार करता हो, वही परमेश्वर है। इससे भिन्न को परमेश्वर स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसी परमेश्वर की सभी जनों को स्तुति, प्रार्थना उसी उपासना करनी चाहिए।

आज भी आवश्यकता है अपने अन्तःकरण की आवाज सुनने की । जब स्वयं के भीतर सोये हुऐ शिव को जागृत करेंगे तभी जाकर शिव के सत्य स्वरूप को जानने का मार्ग प्रशस्त हो पायेगा।

सच्चे शिव का जो संकल्प बालक मूलशंकर ने लिया था, उस संकल्प की परिणति शिव के दर्शन के रूप में हुई। वह कोई पाषाण नहीं और न ही कपोलकल्पित कैलाश पर्वतवासी था। उसी सत्य शिव के ज्ञान ने अबोध बालक मूलशंकर को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विश्वभर में प्रसिद्व करा दिया। भारतवर्ष में देशहित अपने जीवन का सर्वस्व त्याग करने वाले अनेकशः महापुरुष हुए किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती उन सभी महापुरुषों में सर्वश्रेष्ठ थे। सर्वश्रेष्ठ से यहां यह तात्पर्य बिल्कुल भी नहीं है कि किसी का अपमान अथवा निम्नस्तर को प्रस्तुत किया जाये। जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन सबकी अपनी एक अविस्मरणीय विशेषता रही है कि वह अपने सम्पूर्ण जीवन में एक अथवा कुछ कार्यों में ही जुटे रहे। जैसे किसी ने स्वराज्य स्थापना पर, किसी ने धर्म पर, किसी ने विधवा विवाह पर, किसी ने स्वभाषा पर, किसी ने भ्रष्टाचार पर, किसी ने बाल-विवाह पर, किसी ने कन्या शिक्षा पर, किसी ने स्वसंस्कृति-सभ्यता पर ध्यान दिया है किन्तु ऋषिवर देव दयानन्द जी का जीवन एकांगी न होकर सभी दिशाओं में प्रवृत्त हुआ है। सभी विषय से सम्बन्धित कुकर्मों को समाप्त करने का प्रयास किया।

शिवरात्रि के इस पर्व को बोधोत्सव के रूप में मनाने का उद्देश्य यह नहीं है कि बोधरात्री को जो हुआ उसे स्मरण ही किया जाये। अगर बोध रात्री का यही तात्पर्य होता तो स्वामी दयानन्द जी भी शिव को खोजने के लिए एकान्त शान्त पर्वत की किसी कंदरा में जाकर बैठ सकते थे। और उस परमपिता परमेश्वर का ध्यान कर सकते थे, मोक्ष को शीघ्र प्राप्त कर सकते थे किन्तु ऋषि ने वही शिव का स्वरूप स्वयं में अंगीकृत करके अर्थात् कल्याण की भावना को स्वयं के अन्दर संजोकर भारत माता की सेवा में जुट गये। 'इदं राष्ट्राय इदन्नमम' की भावना से अपने जीवन पथ पर निरन्तर अबाध गति से चलते रहे। और अपने जीवन से अनेक अबोधियों को बोधत्व प्राप्त कराकर देशहित समर्पित कराया।

आज हम जब भारत माता की जय बोलते हैं तो वो किसी देवी अथवा किसी व्यक्ति या समुदाय विशेष की जय नहीं है प्रत्युत प्रत्येक भारतवासी की जय बोलते हैं। हम सब इस बोधोत्सव पर बोधत्व को प्राप्त हो राष्ट्र हित में समर्पित होने वाले हो। ऋषिवर का प्रत्येक कर्म देश के हित में लगा और उनका भी यही स्वप्न था कि हमारा प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक हो एवं सत्य मार्ग का अनुसरण करे। - गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

''जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम''

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली

के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव

के 84 वें बलिदान दिवस पर

राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी दिवस

सोमवार, 23 मार्च 2015, प्रातः 10 से दोपहर 1.30 बजे तक

स्थानः जन्तर मन्तर रोड़, नई दिल्ली

अमर शहीदों को श्रद्धाजंलि देने आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचे।

कार्यक्रम के पश्चात ''ऋषि-लंगर'' का आनन्द लें।

डा. अनिल आर्य राष्ट्रीय अधयक्ष

महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामन्त्री

ग्रीष्मकालीन शिविरों की तैयारी प्रारम्भ करें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने सभी प्रान्तीय अध्यक्षों से अपील की है कि अपने अपने क्षेत्र के ग्रीष्मकालीन युवक व युवतियों के शिविरों का कार्यक्रम बना कर केन्द्र को शीघ्र सूचित करें । - महेन्द्र भाई, महामन्त्री

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द पार्क नारंग कॉलोनी, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली -35 की कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से 12-02-2015 को सम्पन्न हुआ। **संरक्षकः** आर्य राजेन्द्र जी, **प्रधानः** आर्य रामनारायण मित्तल जी, **मन्त्री :** आर्य राधोश्याम जी, **कोषाधयक्षः** आर्य प्रदीप जी, **प्रचार मन्त्रीः** आर्य हर्षवर्धन जी, आर्य वीर दल **अधिष्ठाताः** आर्य राजीव गोयल जी।

स्वामी आर्यवेश के नेतृत्व में पलवल से चण्डीगढ़ तक जन चेतना यात्रा प्रारम्भ

शनिवार, 14 फरवरी 2015, महर्षि दयानन्द जी के 191 वें जन्मोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में पलवल से चण्डीगढ़ तक जनचेतना यात्रा का शुभारम्भ आर्य समाज, पलवल शहर से किया गया। यह हरियाणा के 21 जिलों से होती हुई 23 फरवरी 2015 को चण्डीगढ़ पंहुचेगी। यात्रा में कन्या भ्रूण हत्या, पाखण्ड, अन्धविश्वास व नशाखोरी के विरूद्व जनजागरण किया जायेगा। उद्घाटन के अवसर पर पं.नरेशदत जी भजन प्रस्तुत करते हुए,साथ में– स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री राजेन्द्र बीसला (पूर्व विधायक), डा.अनिल आर्य व श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक। सामने सभागार में उपस्थित विशाल आर्य जनसमुदाय। संचालन स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। बहिन प्रवेश – पूनम आर्या के उद्बोधन हुए। आचार्य सन्तराम, श्री विरजानन्द व ब्र. दीक्षेन्द्र ने व्यवस्था सम्भाली। समारोह की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा पलवल के प्रधान श्री रविन्द्र छाबड़ा ने की।

बल्लभगढ़ के सिटी पार्क में उमड़ा जनसैलाब व फरीदाबाद में हुआ भव्य स्वागत
स्वामी श्रद्धानन्द की तपोस्थली गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ ने एक लाख रू. भेंट किए

शनिवार, 14 फरवरी 2015, दोपहरबाद यात्रा के पृथला गांव पंहुचने पर भव्य स्वागत किया गया व बल्लभगढ़ में मथुरा रोड़ पर फिर सिटी पार्क में भव्य स्वागत हुआ तथा जनसैलाब आर्य नेताओं के विचार सुनने के लिये उमड़ पड़ा। चित्र में आर्य समाज, सैक्टर–19, फरीदाबाद के मंच पर डा. अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री महेन्द्र भाई व द्वितीय चित्र में डा. अनिल आर्य का स्वागत करते समाज के प्रधान श्री महेश गुप्ता, श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक, श्री महेन्द्र भाई व गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ के मन्त्री श्री पी. के. मितल,एडवोकेट। इस अवसर पर श्री जयप्रकाश आर्य, श्री कुलभूषण आर्य, श्री नन्दलाल कालड़ा, श्री सुशील शास्त्री, श्री वी.के. आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री गजराज आर्य, श्रीमती विमला ग्रोवर, श्री रामखिलावन आर्य, श्री अनिल हाण्डा, लाला मेघराज आर्य, श्रीमती रोजी पण्डित आदि अनेकों प्रबुद्ध आर्य जन उपस्थित थे।

करनाल में ''दयानन्द दशमी'' पर शोभायात्रा व कन्हैयालाल आर्य की वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती

शनिवार, 14 फरवरी 2015, आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के युवकों के भव्य व्यायाम प्रदर्शन की सभी ने सराहना की। चित्र में अतिथि का स्वागत करते प्रधान श्री सतेन्द्रमोहन कुमार, डा.जयेन्द्र आचार्य, श्री ओमप्रकाश सचदेवा, सभा महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुकरेजा, श्री शांतिप्रकाश आर्य, चौ.लाजपतराय आर्य आदि। द्वितीय चित्र–हरियाणा के सुप्रसिद्वआर्य नेता श्री कन्हैयालाल आर्य व श्रीमती चन्द्रवती आर्या की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर शाल व स्वामी दयानन्द के चित्र से अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य व स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती। इस अवसर पर आचार्य अखिलेश्वर जी, स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य सत्यवीर शर्मा, आचार्य विजयपाल जी, आचार्य ओमप्रकाश जी योगाचार्य आदि अनेको गणमान्य आर्य जन उपस्थित थे।

गाजियाबाद में महर्षि दयानन्द जयन्ती पर शोभायात्रा व सभा सम्पन्न

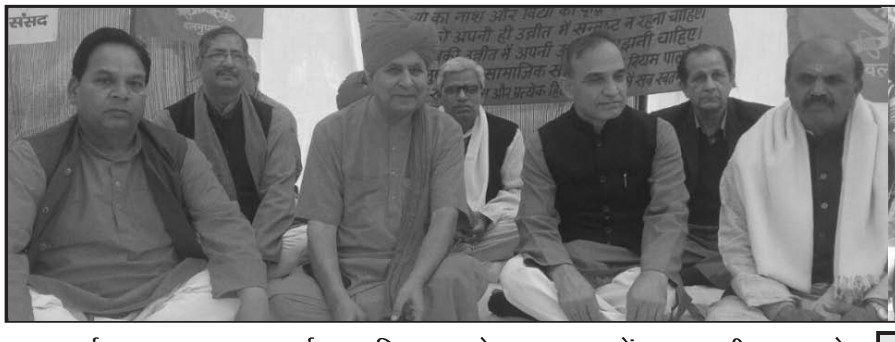
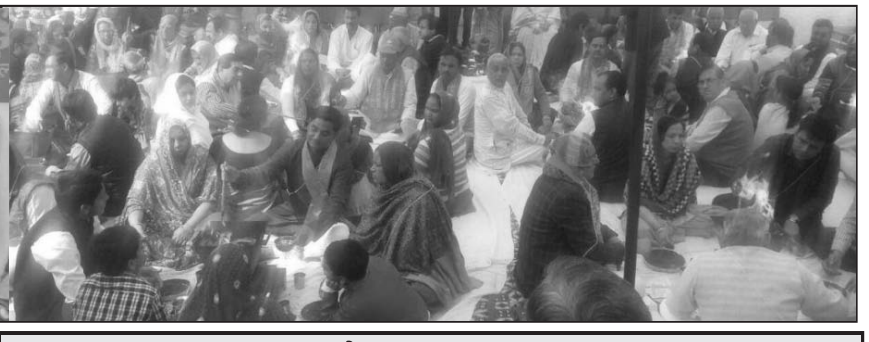

आर्य समाज,वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद के तत्वावधान में 14 फरवरी 2015 को विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया व 15 फरवरी को विशाल सभा सम्पन्न हुई, वैदिक विद्वान, सांसद डा. सत्यपालसिंह ने महर्षि के पद्चिन्हों पर चलने का आह्वान किया। चित्र में मंच पर श्री देवेन्द्र मलिक, श्री महेन्द्र भाई, श्री हीराप्रसाद शास्त्री, स्वामी यज्ञमुनि जी, डा.सत्यपालसिंह व श्री शिवराज शास्त्री। आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया व प्रधान श्री प्रमोद चौधरी ने आभार व्यक्त किया। कुशल संचालन मन्त्री श्री सुरेश आर्य ने किया। इस अवसर पर आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री के. के. यादव, श्री प्रवीन आर्य, डा.वीरपाल विद्यालंकार, श्री यज्ञवीर चौहान आदि उपस्थित थे।

शोक समाचार

1. श्री सुरेन्द्र श्रीधर आयु 50 वर्ष (सुपुत्र डा. प्रेमचन्द श्रीधर) का निधन।
2. श्रीमती शीलादेवी आर्या (माता श्री संजीव आर्य, सुभाष नगर) का निधन।
3. श्री गोपाल आर्य (भ्राता श्री भोपाल आर्य, करनाल) का निधन।
4. श्री वेदव्रत कपूर (भ्राता श्री सुधीर कपूर, फरीदाबाद) का निधन।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970